B- 4
L-23
Indian Society

[भारत में विविधता]

- **भौगोलिक विविधता**
  ⇓
  पहाड़, पठार, जंगल, मैदान क्षेत्र आदि
  ↓
  एकता

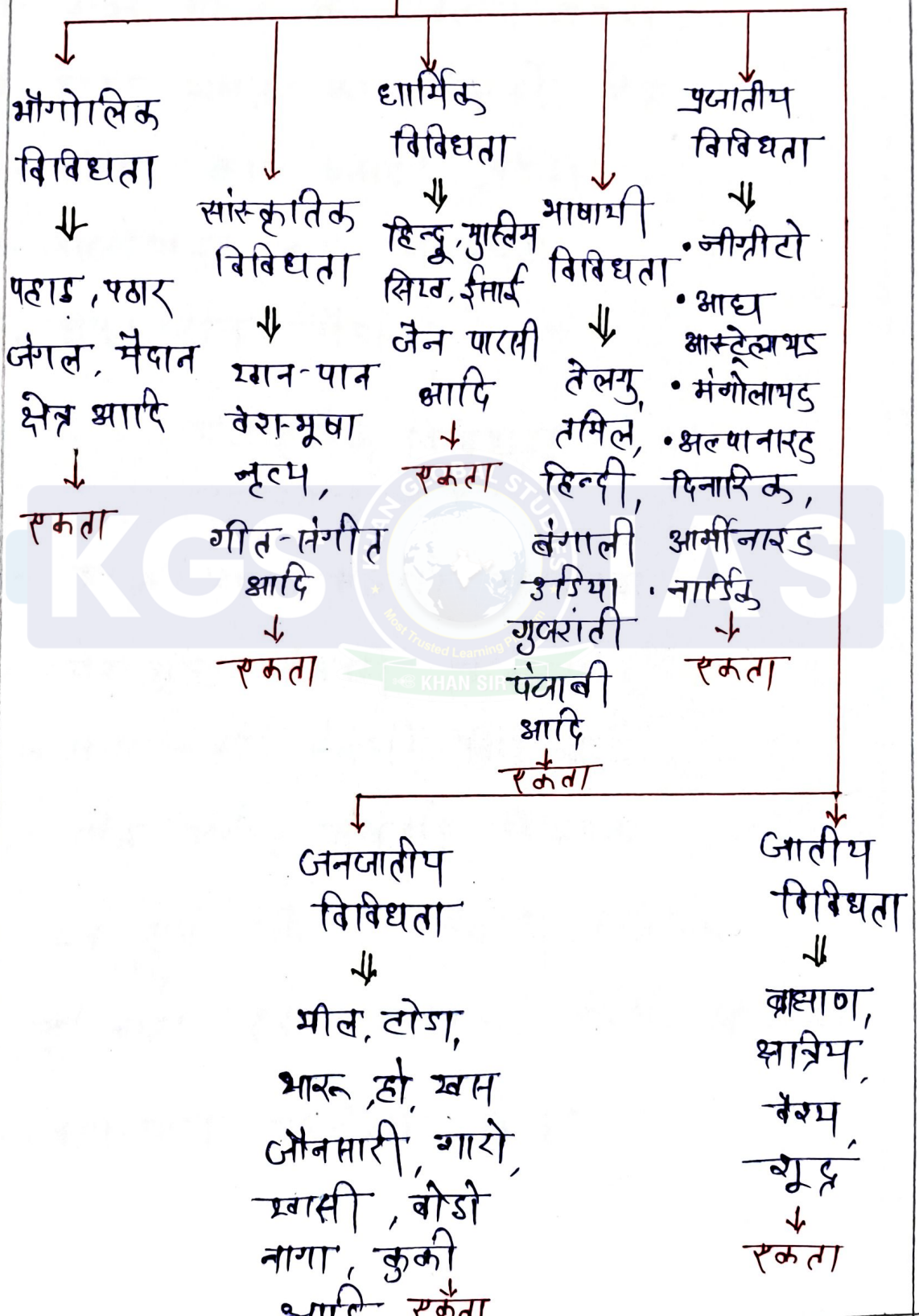

- **सांस्कृतिक विविधता**
  ⇓
  खान-पान, वेश-भूषा, नृत्य, गीत-संगीत आदि
  ↓
  एकता

- **धार्मिक विविधता**
  ⇓
  हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, पारसी आदि
  ↓
  एकता

- **भाषायी विविधता**
  ⇓
  तेलगु, तमिल, हिन्दी, बंगाली, उड़िया, गुजराती, पंजाबी आदि
  एकता

- **प्रजातीय विविधता**
  ⇓
  - नीग्रीटो
  - आद्य आस्ट्रेलायड
  - मंगोलायड
  - अल्पानारड, दिनारिक, आर्मीनारड
  - नार्डिक
  ↓
  एकता

- **जनजातीय विविधता**
  ⇓
  भील, टोडा, थारू, हो, खस, जौनसारी, गारो, खासी, बोडो, नागा, कुकी आदि एकता

- **जातीय विविधता**
  ⇓
  ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र
  ↓
  एकता

KGS IAS
KHAN SIR

भौगोलिक विविधता

1. उत्तर भारत का पर्वतीय प्रदेश
2. उत्तर भारत का मैदानी क्षेत्र
3. दक्षिण का पठारी प्रदेश
4. राजस्थान का मरूस्थल
5. समुद्रतटीय मैदान

सांस्कृतिक विविधता

1. खान-पान संबंधी विविधता
2. वेश-भूषा संबंधी विविधता
3. नृत्य कला संबंधी विविधता
4. गीत-संगीत संबंधी विविधता
5. पर्व एवं त्यौहार संबंधी विविधता
6. मूर्तिकला एवं वास्तुकला संबंधी विविधता
7. विचारधारा संबंधी विविधता

KGS IAS

धार्मिक विविधता

1- हिन्दू - वैष्णो, शैव, शाक्त

2- मुस्लिम - सिया, सुन्नी

3. सिख - निरंकारी, राधास्वामी, नामधारी

4. ईसाई - कैथोलिक, प्रोटेस्टेन्ट

5. बौद्ध - स्थविर, महासांघिक

6 जैन - दिगम्बर - श्वेताम्बर

7- पारसी -

भाषायी विविधता

1. इण्डो-यूरोपीयन भाषाई परिवार (आर्य)

2. द्रविड़ भाषाई परिवार

3. ऑस्ट्रिक भाषाई परिवार

4. सारनो तिब्बती भाषाई परिवार

KGS IAS

प्राजातीय विविधता

1. नीग्रीटो
2. आद्य ऑस्ट्रेलायड
3. मंगोलायड
4. पूर्व मंगोलायड
5. अल्पानाइड, दिनारिक, आर्मीनाइड
6. नार्डिक

जनजातीय विविधता

1. उत्तर भारत की जनजातियाँ
2. मध्य भारत की जनजातियाँ
3. दक्षिण भारत की जनजातियाँ
4. उत्तर पूर्व भारत की जनजातियाँ

जातीय विविधता

1. ब्राह्मण
2. क्षत्रीय
3. वैश्य
4. शूद्र

KGS IAS

वैश्वीकरण का भारत की सांस्कृतिक विविधता पर प्रभाव

- भारतीय अर्थव्यवस्था के साथ-साथ भारतीय समाज एवं संस्कृति का वैश्विक विस्तार की प्रक्रिया को वैश्वीकरण की संज्ञा दी जाती है इसने भारतीय समाज के सभी पक्षों को प्रभावित किया है जिनमें भारत की सांस्कृतिक विविधता पर प्रभाव प्रमुख है।

इन प्रभावों को निम्न बिन्दुओं के तहत देखा जा सकता है

-1- वैश्वीकरण - आधुनिकता के मूल्यों का तीव्र प्रसार और तार्किक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का तीव्र विकास

फलतः भारतीयों में परम्परागत संस्कृति को छोड़कर आधुनिक बनने की प्रवृत्ति तीव्र एवं आधुनिक समाज का निर्माण

⇓

फलतः भारत की विविधता कमजोर

-2- वैश्वीकरण- पाश्चेमी संस्कृति एवं वैश्विक संस्कृति का तीव्र प्रसार

फलत: एक संश्लेषित वैश्विक संस्कृति का निर्माण

भारतीय समाज की विविधता कमजोर

3. वैश्वीकरण - संचार क्रान्ति, यातायात के साधनों का विकास, बाजार अर्थव्यवस्था का विकास।

फलत: स्थानीय संस्कृति का भारतीयकरण और एक संश्लेषिक भारतीय संस्कृति का निर्माण

फलत: भारतीय समाज की विविधता कमजोर

4. वैश्वीकरण - पहचान का संकट

फलत: लोगों का अपने नृजातीय तत्वों / परम्परागत संस्कृति को पुन: अपनाया जाना

फलत: भारतीय समाज की विविधता पुन: मजबूत

समीक्षा

स्पष्ट है, वैश्वीकरण की वर्तमान प्रक्रिया ने कई रूपों में एक संश्लेषित संस्कृति का निर्माण करके भारतीय संस्कृति की विविधता को कमजोर किया तो दूसरी तरफ पहचान के संकट के रूप में इसकी विविधता को पुनःस्थापित करने का प्रयास भी किया है।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि भारतीय समाज की विविधता पर वैश्वीकरण का नकारात्मक प्रभाव संक्रमणकालीन अवस्था का प्रभाव अधिक है, जहाँ कृत्रिम आधुनिकता का विकास हो रहा है।

परन्तु आधुनिकता के परिपक्व स्तर पर बिना सांस्कृतिक विखण्डन के भी आधुनिक समाज का निर्माण संभव है और भारतीय समाज की विविधता बनी रह सकती है (उदाहरण जापान)

भारत में विविधताजनित चुनौतियाँ/समस्याएँ

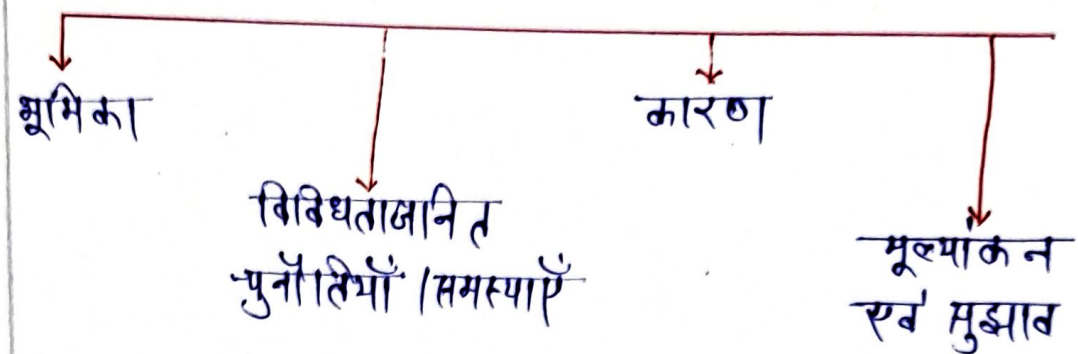

(a) भूमिका :-

भारतीय समाज एक बहुलक समाज रहा है और विविधता भारतीय समाज की प्रमुख विशेषता रही है। हाल के वर्षों में इन विविधताओं को आधार बनाकर कई तरह की समस्याएँ/चुनौतियों का उद्भव संभव हुआ है जिन्हें निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत देखा जा सकता है।

(b) भारतीय समाज में विविधता जनित चुनौतियाँ/समस्याएँ :-